नित्य नियम पाठ विधि



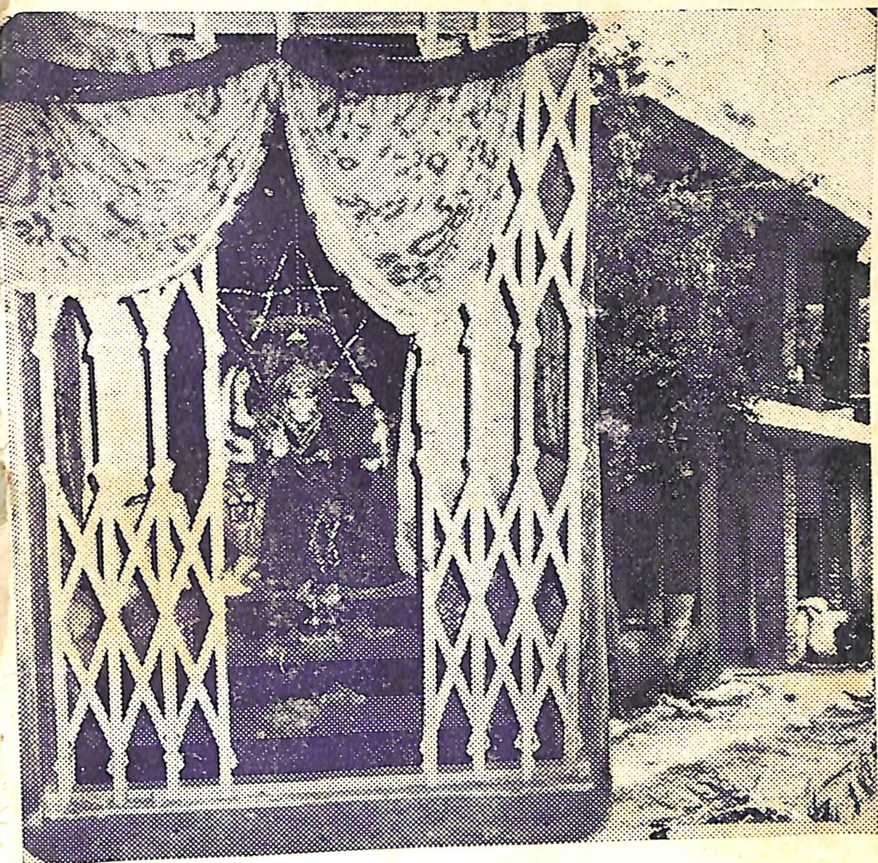
श्री मस्तबब आश्रम
पटोली मंगोत्रियां जम्मू ।

मुद्रक :
ज्योती प्रिन्टज़
पटोली मंगोत्रियां, जम्मू - 180007

स्वामी मस्तराम जी महाराज के
सद्‌वचन

— साधु रमता भला ।
— साधु त्याग करता है, स्वेच्छा से-पर दूसरे पुरुष डंडे ज़ोर से ।
— परमार्थ सतकर्म, सदभाव, सतगुण और सतविचार दूसरा नाम है ।
— परात्मा एक भाव है, और वह है प्रेम ।
— जीवन एक महायज्ञ है, और श्वास-उश्वास, सतकर्म औ सदभाव इसकी आहुतियां ।
— परोपकार बहुत बडी साधना है ।
— तोड़ने से जोड़ना अच्छा है ।
— भगवान के नाम पर अर्पण होना, यही धर्म है और कर्तव्य भी
— भक्तजन रक्षा करते हैं, हानि नहीं पहुंचाते ।
— गुरू-शिष्य का नाता एक सूक्ष्म रिश्ता है, इसमें भावुकता क कोई स्थान नहीं ।
— पैसा आता है तो आने दो; पर पैसे के पीछे मत भागो ।
— सब जीव-जन्तु परमात्मा के ही रूप हैं, जैसे-अंडं अं जगत अंडं ।
— निष्काम कर्म करने से मन और बुद्धि का मैल घुलता है ।
— धर्म हमेशा से महिलाओं के कारण ही जीवित रहा है औ आगे बढ़ा है ।
— शिष्य ही गुरू को उठाते हैं और वही गिराते भी हैं ।
— मैं कोई जादूगर नहीं कि परमात्मा को हाथ पकड कर प्रत्यक्ष रूप में लोगों के सामने खड़ा कर दूं ॥

मुद्रक : ज्योती प्रिन्टर्ज़, पटोली जम्मू ।



श्री मस्तबब आश्रम

पटोली मंगोत्रियां, **जम्मू** (तवी)
पिन-180007

विषय सूची

प्रथम संस्करण—1000 प्रतियां   मूल्य : 10 रुपये

जनवरी : 1993



ॐ श्री गणेशाये नमः

शुकलाम्बरधरं विष्णुं शशि वर्णं चतुर्भुजम
प्रसंन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविध्नोपशान्तये
अभिप्रीत्यार्थ सिद्धयर्थं पूजितो यः सुरैरपि
सर्वविघ्नच्छिदे तस्मै श्री गणाधिपतये नमः ॥

विभ्रद्दक्षिण हस्त पद्म युगले दन्ताक्ष सूत्रे शुभे
वामे मोदकपूर्ण पात्र परुषो नागोपवीती त्रिदृक् ।
श्रीमान् सिंहयुगासनः श्रुतियुगे शङ्खौ वहन्मौलिमान्
दिश्यातईश्वरपुत्र ईश भगवांलम्बोदरः शर्म नः ॥

नमो नमो गजेन्द्राय एकदन्त धराय च
नमः ईश्वर पुत्राय श्री गणेशाय नमो नमः

गुरुः ब्रह्मा गुरुः विष्णो गुरुः साक्षात महेश्वरः
गुरुः एव जगत् सर्वम् तस्मै श्रीगुरुवे नमः ॥

अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः

आपदामपर्हतारं दातारम सर्वसंपदाम
लोकाभिरामं श्री रामं भूयो भूयो नमाम्यहं ॥

ध्यानमूलं गुरोर्मूर्ति पूजामूलं गुरोपदं
शास्त्रमूलं गुरोवाक्यं मोक्षमूलं गुरोःकृपा ॥

नमामि सत्गुरूं शान्तं प्रत्यक्षं शिवरूपिणं
शिरसा योगपीठस्थं धर्मकामार्थ सिद्धये ॥

ओम् ब्रह्मानन्दं परमसुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिं
द्वन्द्वातीतं गगनसदृशं तत्त्वमस्यादिलक्ष्यम्

एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधीसाक्षिभूतं
भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरुं तं नमामि ॥

ओम् शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभम् सुरेशं
विश्वाधारं गगनसदृशं मेगवर्णं शुभाङ्गम्
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यान गम्यम्
वन्दे विष्णुं भवभयहरम् सर्वलोकैकनाथम् ॥

यं ब्रह्मावरुणेन्द्र रुद्रमरुतः स्तुन्वन्ति दिव्यैः स्तवैं
वेदैः साङ्गपदैक्रमोपनिषदैर्गायन्ति यं सामगा
ध्यानावस्थिततग्दतेन मनसा पश्यन्ति यं योगिनो
यस्यान्तं न विदुः सुरसुरगणाः देवाय तस्मै नमः ॥

ओम् वन्दे देवमुमापतिं सुरगुरुं वन्दे जगत्कारणम्
वन्दे पन्नगभूषणं मृगधरं वन्दे पशूनां पतिम् ।
वन्दे सूर्यशशाङ्कवह्निनयनं वन्दे मुकुन्दप्रियम्
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शङ्करम् ॥

शान्तं पद्मासनस्थं शशिधरमुकटं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रं
शूलं वज्रं च खड्गं परशुमभयदं दक्षिणाङ्गे वहन्तं ।
नागं पाशं च घन्टा डमरूकसहितं सांकुशं वामभागे
नानालङ्कारदीप्तं स्फटिकमणिनिभं पार्वतीशं नमामि



गणेश स्तुति

हेमजा सुतंभजं गणेशं ईश नन्दनम
एक दन्त वक्र तुण्ड नागयज्ञो सूत्रकम
रक्त गात्र धूम्रनेत्र शुकल वस्त्र मडितम
कल्पवृक्ष भक्त रक्ष नमोस्तुते गजाननम

पाशपाणि चक्रपाणि मूषकाधि रोहिणीम
अग्निकोटि सूर्यज्योति वज्रकोटि पर्वतम
चित्रमाल भक्तिजाल बालचन्द्र शोभितम ।

कल्पवृक्ष......

विश्ववीर्य विश्व दीर्घ विश्वकर्म निर्मलम
विश्वहर्ता विश्वकर्ता यत्र तत्र पूजितम
चतुर्मखं चतुर्भजं सेवितं चुर्तयुगम

कल्पवृक्ष......

भूतभव्य हव्य कव्य भ्रगौ भार्गव वन्दितम

देववहि्न कालजाल लोकपाल वन्दितम
पूर्णब्रह्म सूर्यवर्ण पुरुषं पुरान्तकम

कलपवृक्ष......

ऋद्धि बुद्धि अष्टसिद्धि नव निधानदायकम
यज्ञकर्म सर्व धर्म वर्ण वर्णरूचितम
भूतधूत दुष्ट मुष्ट दान्वै सर्दाचितं

कलपवृक्षा .....

हर्ष रूप वर्ष रूप पु रुष रूप वन्दितम
शोर्प करन रक्त वर्ण रक्त चंदन लीपितम
याग इष्ट योग सृष्ट योग दृष्टेदायकम

कलपवृक्ष .....



गुरुस्तुति :

स्व० श्री योगीराज नन्दलाल जी के पाद्य कमलों में
स्व० श्री नीलकण्ठ जी की तुत्छ भेंट



अज्ञान घटे सिर्य प्रकाश छुक आसवोनुय
ज्ञान प्रकाश छुक आसवोनुय
ॐ श्री सत्गुरु क्षण क्षण छुम आसर् चोनुय
ॐ श्रीसत्गुरु.........

चय छुक ब्रह्मा चय हा विष्णु-महीश्वरै
चय विश्वमय छुक अज़र अमर अक्षर थरै
पर त्रन गुणन पादि प्रणाम भविनय म्योनुय
ॐ श्री सत्गुरु क्षण क्षण छुम आसर् चोनुय
ॐ श्रीसत्गुरु ....

चान्यन पादन हन्दि गरदे हुन्दय अंजन
युस लागि नेत्रन देव द्रष्टि तमिस छि बनन
यथ न कांह वुछान तथ सदा चय छुख वुछवोनुय
ॐ श्रीसत्गुरु ....

दया सागर कर म्य दया दीनस क्षीनस
सिद्धी दित्ताम मदमोचन म्य बुद्धिहीनस
ब अद् कस वन आॅरत्य नाद छुक बोज़वोनुय
ॐ श्रीसत्गुरु ....

शरण ब आसय च्यय प्योसय परण पादन
वरुम म्य दासस थावतम कन आरत्यन नादन
तरन भवसर चयोन प्रभाव इमव ज़ोनुय
ॐ श्रीसतगुरु.........

छुक सिद्ध योगी ब छुस रोगी दिम म्य दवा
औषध चान्यन पादन हंज़ गरद छ् ना
उत्तम चूरण सर्व रोगन छु कासवोनुय
ॐ श्रीसतगुरु.........

घटे घाशर चानि दयायि म्य रोग हटे
मटे छुसय तारुम भवसर अके वोटे
लटे अके मोख म्य हावतम प्रज़लवोनुय
ॐ श्रीसतगुरु.........

सन्ताप अगन पाप स'त्यन गोमुत प्रबल
शेरस प्यठ थाव कर कमल पनुन्य शीतल
संताप च़ल्यम् पाप गल्यं नोव तय प्रोनुय
ॐ श्रीसतगुरु.........

सेतार मनुक तार चॉरिथ सदा दिवान
हद यथ ना कुने बोद्ध म्यानि सुय स्तुता ग्यवान
वृच़ म्यानि नच़ान कनव बोज़तम लोलवनवोनुय
ॐ श्रीसतगुरु.........

करतम स दया वरतम तल च़रनार बिदन

छुक बोध द्रष्टि चय दिवान अन्धन त मन्दन
अन्दान छुय न्याय चानि दयायि कर पाय स्योनुय
ॐ श्रीसतगुरु.........

चिन्तामनि सौन च बनावान छुक त्रामस
फोतस मोखतय पोखतः बनावान छुक खामस
चय घटि हुन्द लाल स्वामी नन्द लाल छुय नाव
चोनुय
ॐ श्रीसतगुरु.........

ई ब न ओसुस ती ओसुस ज़ानान ब पान
दयायि चानि यी ब छुस ती म्य ज़ोनुम टकान
रोवमुत लोबुम पजि़ लबित नजि़ रावरोनुय
ॐ श्रीसतगुरु.........

इमन इमन गव जि़ इमन चय कुन लयस
दयस स'त्यन गयि जि़ मीलिथ वाति पयस
भयस ज़य गोम दोन म्य रूदुम कुनुय भासवोनुय
ॐ श्रीसतगुरु.........

भवसर तरनुक 'नीलकंठस' बनितन उपाय
स्वामी नन्दलाल तय स्वामी लालजी रूजि़तन
सहाय
छी तंग आमति अनज़ल हय्थ छिय मंगवोनुय
ॐ श्रीसतगुरु.........

विष्णु स्तुति

ॐजय नारायण जय पुरुषोत्तम जय वामन कंसारे
उद्धर मामऽसुरेशविनाशिन् पतितोऽहं संसारे।

घोरं हर मम नरकरिपो केशव कल्मषभारं
मामऽनुकम्पय दीनमऽनाथं कुरु भवसागरपारम्

जय जय देव जयासुरसूदन जय केशव जय विष्णो
जय लक्ष्मी मुखकमलमधुव्रत जय दशकन्धजिष्णो
घोरं०......

त्वं जननी जनकः प्रभुरऽच्युत त्वं सुहृतकुलमित्रम्
त्वं शरणं शरणागत वत्सल त्वं भवजलधिवहित्रम्
घोरं०......

पुनरऽपि जननं पुनरऽपि मरणं पुनरऽपि गर्भनिवासं
सोढुम-ऽलंपुनरऽस्मिन्माधव मामुद्धर निजदासम्
घोरं०......

जनकसुतापति चरणपरायण शंकरमुनिवर गीतं
धारय मनसि कृष्ण पुरुषोत्तम वारय संसृतिभीतम्
घोरं०......

यद्यपि सकलमऽहं कलयामि हरे नहि किमऽपि स सत्वं
तद्ऽपि न मुञ्चित मामिदमऽच्युत पुत्रकलत्रममत्त्वम्
घोरं०......

गौरी स्तुतिः

लीलारब्धस्थापित लुप्ताखिल लोकां
लोकातीतै-र्योगिभिन्त हृदि मृग्याम
बालादित्यश्रेणि-समानद्युति पुंजां
गौरीमम्बामम्बुरहाक्षीमहमीडे

आशापाशक्लेशविनाशं विदधानां
पादाम्भोज् ध्यानपराणां पुरुषाणाम
ईशीमीशार्ङ्गधहरांतां तनुमध्यां
गौरीम०.........

प्रत्याहारध्यान समाधिस्थितिभाजां
नित्यं चिते निवृतिकाष्ठां कलयनतीम
सत्यज्ञानानन्दमयीं तां तडिदाभां
गौरीम०.........

चन्द्रा पीडानन्दिमन्दस्मितवक्त्रां
चन्द्रा पीडा लङकृतलोलाकभाराम
इन्द्रो पेन्द्राद्यर्चित पादा म्भुजयुग्मां
गौरीम०.........

नानाकारैः शक्तिकदम्बैर्भुवनानि
व्याप्य स्वैरं क्रीडतयासौ स्वयमेका
कलयाणीं तां कलप लतामानतिभाजां
गौरीम०.........

मूलाधादुत्थित वन्तीं विधिरन्ध्रं
सौरं चान्द्रं धाम विहायज्वलिताङ्गीम
स्थूलां सूक्ष्मां सूक्ष्म तरां तामभवन्द्यां
गौरीम०........

आदिक्षान्तामक्षर मूर्त्या विलसन्तीं
भूते भूते भूतकदम्ब प्रसवित्रीम
शब्द ब्रह्मानन्दे मयीं तामभिरामां
गौरीम०........

यस्या कुक्षौ लीनमखण्डं जगदण्डं
भूयो भूयः प्रदुरभूदक्षतमेव
भर्त्रे सार्धं तां स्फटिकाद्रौ विहरन्तीं
गौरीम०........

यस्यामेतत्प्रोतमशेषं मणि माला
सूत्रे यद्व त्कापि चरं चाप्यचरं च
तामधयात्मज्ञान पदव्या गमनीयां
गौरीम०........

नित्यः सत्यो निष्कल एको जगदीशः
साक्षी यस्याः सर्ग विधौ संहरणे च
विश्वत्राण क्रीडनशीलां शिवपत्नीं
गौरीम०........

प्रातः काले भावविशुद्ध विदधानो
भक्तया नित्यं जल्पति गौरीदशकं यः
वाचां सिद्धिसम्पर्क्तिमुच्चै शिवभक्तिं
तस्या वशयं पर्वतपुत्री विदधाति ।

आधीनाममगधं दिव्यं व्याधीनां मूलकृन्तनम्
उपद्रावाणां दलनं महादेवमुपास्महे ॥

आधियन हुन्द युस औषधि छु आसवुन, व्याधियन हुन्द युस मूल गालान
कठिञिण उपद्रवन द्रोत युस छु वायान्, तस महादेवस कर: भ पुज़ा ।

अहं पापी पाप क्षपण निपुणाः शंकर भवान्
अहं भीतो भीता भय वितरणे ते व्यसनिता
अहं दीनो दीनोद्धरण विधि सज्जस्वमितरत्
न जानेहं वक्तुँ कुरु सकल शौचे मीय कृपाम्

ही शंकर छुस भ पापी आसवुन, चय पापन छुख नाश करान ।
खूचमुत छुस भ भिइ खोफ छुम म्य बासान, चय अभय दिवान चय भय कासान ।
छुस भ दीन भिइ आरत्येन हुन्द ओरुत, आरुत्यन भवसर चय तारान ।
कर दया म्य बुद्धिहीनस प्यठ च़ पानै, अमिखोत ज्याद छुस न केंह भ ज़ानान ।

जनस्त्वदपादाब्ज् श्रवण मनन ध्यानिपुणाः
स्वयं ते विस्तीर्णा न खलु करुणा तेषु करणा ।
भवे लीने दीने मयि मनन हीने न करुणा
कथं नाथ ख्यातस्त्वमसि करुणा सागर इति ॥

ही शंकर चानि चरण कमलुक युस, करि श्रवण मनन ब्यई निदिध्यासन
तरि पानै सु भवसरह हाजत तस, चानिन कटाक्षण हुन्द कति रोज़न ।
संसारस मंज़ फटिमतिस म्य दुखियस, विचार रुस्तिस त म्य अनाथस
यलि करख न दया म्य मूढ़ भाव सोस्तिस, नाव चोन दयासागर वन ब कस ।
कति सपदि नाव चोन मशहूर ज़गतस, शंकर तारान छु भवसागरस ॥

शिव महिम्नां स्तोत्रम्

पुष्पदन्त उवाच

ॐ महिम्नः पारन्ते परमऽविदुषो यद्यसदृशी-
स्तुतिर्ब्रह्मादीनामपि तदवसन्नास्त्वयि गिरः।
अथावाच्यः सर्वः स्वमतिपरिणामावधि गृणन
ममाप्येष स्तोत्रे हर निरपवादः परिकरः।१।

अतीतः पन्थानं तव च महिमा वाङ्मनसयोर
तद्व्यावृत्या यं चकितमभिधत्ते श्रुतिरपि।
स कस्य स्तोतव्यः कतिविधगुणः कस्य विषयः
पदे त्वर्वाचीने पतति न मनः कस्य न वचः।२।

मधुस्फीता वाचः परमममृतं निर्मितवत-
स्तव ब्रह्मन्किं वागऽपि सुरगुरोर्विस्मयपदम्।
मम त्वेतां वाणीं गुणकथनपुण्येन भवतः
पुनामीत्यर्थेऽस्मिन्पुरमथन ! बुद्धिर्व्यवसिता।३।

तवैश्वर्य्यं यत्ताज्जगदुदयरक्षाप्रलयकृत्
त्रयीवस्तु व्यस्तं तिसृषु गुणभिन्नासु तनुषु।
अभव्यानामस्मिन्वरद रमणीयामरमणीम्
विहन्तुंव्याक्रोशीं विदधत इहैके जडधियः।४।

किमीहः किंकायः स खलु किमुपायस्त्रिभुवनम्
किमाधारो धाता सृजति किमुपादानइति च ।
अतर्क्यैश्वर्ये त्वय्यनवसरदुःस्थो हतधियः
कुतर्कोऽयं कांश्चिन्मुखरयति मोहाय जगताम् ।५।

अजन्मानो लोकाः किमवयववन्तोऽपि जगताम्
अधिष्ठातारं किं भवविधिरनादृत्य भवति ।
अनीशो वा कुर्याद् भुवनजनने कः परिकरो
यतो मन्दास्त्वां प्रत्यमरवर ! संशेरत इमे ।६।

त्रयी सांख्यं योगः पशुपतिमतं वैष्णवमिति
प्रभिन्ने प्रस्थाने परमिदमदः पथ्यमिति च ।
रुचीनां वैचित्र्यादृजुकुटिलनानापथजुषाम्
नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव ।७।

महोक्षः खट्वाङ्गं परशुरजिनं भस्म फणिनः
कपालं चेतीयत्तव वरद ! तन्त्रोपकरणम् ।
सुरास्तां तामृद्धिं दधति तु भवद्भ्रूप्रणिहितां
नहि स्वात्मारामं विषयमृगतृष्णा भ्रमयति ।८।

ध्रुवं कश्चित्सर्वं सकलमपरस्त्वध्रुवमिदं
परो ध्रौव्याध्रौव्ये जगति गदति व्यस्तविषये ।
समस्तेऽप्येतस्मिन्पुरमथन ! तैर्विस्मित इव
स्तुवञ्जिह्रेमि त्वां न खलु ननु धृष्टा मुखरता ।९।

तवैश्वर्यं यत्नाद् यदुपरि विरञ्चिर्हरिरधः
परिच्छेत्तुं यातावनलमनलस्कन्दवपुषः।
ततो भक्तिश्रद्धाभरगुरु गृणद्भ्यां गिरिश! यत्
स्वयं तस्थे ताभ्यां तव किमनुवृत्तिर्नफलति।१०।

अयत्नादासाद्य त्रिभुवनमवैरव्यतिकरम्
दशास्यो यद्बाहूनभृत रणकण्डूपरवशान्।
शिरः पद्म-श्रेणी-रचित-चरणाम्भोरुह-बलेः
स्थिरायास्त्वद्भक्तेस्त्रिपुरहर! विस्फूर्जितमिदम्।११।

अमुष्य त्वत्सेवासमधिगतसारं भुजवनम्
बलात्कैलासेऽपि त्वदधिवसतौ विक्रमयतः।
अलभ्या पातालेऽप्यलसचलितांगुष्ठशिरसि
प्रतिष्ठात्वय्यासीद्ध्रुवमुपचितो मुह्यतिखलः।१२

यदृद्धिं सुत्राम्णो वरद ! परमोच्चैरपि सती-
मधश्चक्रे बाणः परिजनविधेयत्रिभुवनः।
न तच्चित्रं तस्मिन् वरिवसितरि त्वच्चरणयोर्न
कस्याप्युन्नत्यै भवति शिरसस्त्वय्यवनतिः।१३।

अकाण्डब्रह्माण्डक्षयचकितदेवासुरकृपा-
विधेयस्याऽसीद्यस्त्रिनयन ! विषं संहृतवतः।
स कल्माषः कण्ठे तव न कुरुते न श्रियमहो
विकारोपिश्लाघ्यो भुवनभयभङ्गव्यसनिनः।१४।

असिद्धार्था नैव क्वचिदपि सदेवासुरनरे
निवर्तन्ते नित्यं जगति जयिनो यस्य विशिखाः ।
स पश्यन्नीश त्वामितरसुरसाधारणमभूत
स्मरःस्मर्तव्यात्मा नहि वशिषु पथ्यः परिभवः ।१५।

मही पादाघाताद व्रजति सहसा संशयपदं
पदं विष्णोर्भ्राम्यदभुजपरिघरुग्णग्रहगणम् ।
मुहुर्द्यौर्दौस्थ्यं यात्यनिभृतजटाताडिततटा
जगद्रक्षायै त्वं नटसि ननु वामैव विभुता ।१६।

वियदव्यापी तारागणगुणितफेनोदगमरुचिः
प्रवाहो वारां यः पृषतलघुदृष्टः शिरसि ते ।
जगत्द्वीपाकारं जलधिवलयं तेन कृतमि-
त्यनेनैवोन्नेयं धृतमहिम ! दिव्यं तव वपुः ।१७।

रथः क्षोणी यन्ता शतधृतिरगेन्द्रो धनुरथो
रथाङ्गे चन्द्राकौं रथचरणपाणिः शर इति ।
दिधक्षोस्ते कोयं त्रिपुरतृणमाडम्बरविधि
विधेयैः क्रीडन्त्यो न खलुपरतन्त्राः प्रभुधियः ।१८।

हरिस्ते साहस्त्रं कमलबलिमाधाय पदयो-
र्यदेकोने तस्मिन्निजमुदहरन्नेत्रकलम् ।
गतो भक्त्युद्रेकः परिणतिमसौ चक्रवपुषा
त्रयाणांरक्षायै त्रिपुरहर जागर्ति जगताम् ।१९।

क्रतौ सुप्ते जाग्रत्त्वमसि फलयोगे क्रतुमतां
क्व कर्म प्रध्वस्तं फलति पुरुषाराधनमृते ।
अतस्त्वां सम्प्रेक्ष्य क्रतुषु फलदानप्रतिभुवं
श्रुतौ श्रद्धां बद्ध्वा दृढपरिकरः कर्मसुजनः ।२०।

क्रियादक्षो दक्षः क्रतुपतिरधीशस्तनुभृता-
मृषीणामार्त्विज्यं शरणद ! सदस्याः सुरगणाः ।
क्रतुभ्रंशस्त्वत्तः क्रतुफलविधानव्यसनिनो
ध्रुवं कर्तुः श्रद्धाविधुरमभिचाराय हि मखाः ।२१।

प्रजानाथं नाथ ! प्रसभमभिकं स्वां दुहितरं
गतं रोहिद्भूतां रिरमयिषुमृष्यस्य वपुषा ।
धनुष्पाणेर्यातं दिवमपि सपात्राकृतममुं
त्रसन्तंतेऽद्यापि त्यजति न मृगव्याधरभसः ।२२।

अपूर्वं लावण्यं विवसनतनोस्ते विमृशतां
मुनीनां दाराणां समजनि सकोपव्यतिकरः ।
यतोभग्ने गुह्ये सकृदऽपि सपर्या विदधतां
ध्रुवंमोक्षो श्लीलं किमपि पुरुषार्थंप्रसवितें ।२३।

स्वलावण्याशंसा धृतधनुषमन्हाय तृणवत्
पुरः प्लुष्टं दृष्टवा पुरमथन ! पुष्पायुधमपि
यदि स्त्रैणंदेवी यमनिरतदेहार्धघटना-
दवैतित्वामद्धावत वरद ! मुग्धा युवतयः ।२४।

श्मशानेष्वाक्रीडा स्मरहर ! पिशाचाःसहचरा-
श्चिताभस्मालेपः स्त्रगपि नृकरोटी परिकरः ।
अमङ्गल्यं शीलं तव भवतु नामैवमखिलं
तथापि स्मर्तृणां वरद ! परमं मङ्गलमसि ।२५।

मनः प्रत्यक्चित्ते सविधमविधायात्तमरुतः
प्रहृष्यद्रोमाणः प्रमदसलिलोत्सङ्गितदृशः ।
यदालोक्याह्लादं हृद इव निमज्ज्यामृतमये-
दधत्यन्तस्तत्त्वंकिमपि यमिनस्तत्किलभवान् ।२६।

त्वमर्कस्त्वं सोमस्त्वमसि पवनस्त्वं हुतवहः
स्त्वमापस्त्वं व्योमत्वमु धरणिरात्मात्वमितिच
परिच्छिन्नामेवं त्वयि परिणता बिभ्रति गिरम
न विद्मस्तत्तात्त्वंवयमिह तु यत्त्वंनभवसि ।२७।

त्रयीं तिस्त्रो वृत्तीस्त्रिभुवनमथो त्रीनऽपि सुरा-
नकाराद्यैर्वर्णैस्त्रिभिरभिदधत्तीर्णविकृति ।
तुरीयं ते धाम ध्वनिभिरवरुन्धानमणुभिः
समस्तंव्यस्तं त्वां शरणद गृणात्योमितिपदम् ।२८।

भवःशर्वो रुद्रः पशुपतिरथोग्रः सहमहां-
स्तथाभीमेशानाविति यदभिधानाष्टकमिदम् ।
अमुष्मिन्प्रत्येकं प्रविचरति देव श्रुतिरपि
प्रियायास्मैधाम्नेप्रणिहितनमस्योऽस्मिभवते ।२९।

वपुष्प्रादुर्भावादनुमितमिदं जन्मनि पुरा
पुरारे ! नैवाहं क्वचिदपि भवन्तं प्रणतवान् ।
नमन्मुक्तः सम्प्रत्यतनुरहमग्रेप्यनतिमान
महेश ! क्षन्तव्यं तदिदमपराधद्वयमपि ।३०।

नमो नेदिष्ठाय प्रियदव ! दविष्ठाय च नमो
नमः क्षोदिष्ठाय स्मरहर ! महिष्ठाय च नमः ।
नमो वर्षिष्ठाय त्रिनयन ! यविष्ठाय च नमो
नमः सर्वस्मैते तदिदमिति सर्वाय च नमः ।३१।

बहुलरजसे विश्वोत्पत्तौ भवाय नमो नमः
प्रबलतमसे तत्संहारे हराय नमो नमः ।
जनसुखकृते सत्वोद्रिक्तौ मृडाय नमो नमः
प्रमहसि पदे निस्त्रैगुण्येशिवाय नमो नमः ।३२।

श्रीपुष्पदन्त मुखपङ्कजनिर्गतेन
स्तोत्रेण किल्विषहरेण हरप्रियेण ।
कण्ठस्थितेन पठितेन समाहितेन
सुप्रीणितो भवतिर्महेशः ॥

इत्येषा वाङ्मयी पूजा श्रीमच्छङ्करपादयोः ।
अर्पिता तेन मे देवः प्रीयतां च सदाशिः ॥



भैरव स्तुति

व्याप्तचराचर भावविशेषं
चिन्मयमेकम अनन्तम अनादिम्।
भैरवनाथम अनाथ शरण्यं
तन्मयचित्ततया हृदि वंदे ॥
त्वन्मयमे तदऽशेषम् इदानीं
भाति मम त्वद् अनुग्रह शक्तया।
त्वं च महेश ! सदैव ममात्मा
स्वात्म मयं मम तेन समस्तम् ॥
स्वात्मनि विशगते त्वयि नाथे
तेन न संसृति भीतिः कथाऽतस्ति।
सत्स्वपि दुर्धर दुःख विमोह
त्रास विधायिषु कर्मगणेषु ॥
अन्तक ! मां प्रति मा दृशमेनां
क्रोध करालतमां विदधीहि।
शंकर सेवन चिन्तन धीरो
भीषण भैरव शक्तिमयोऽस्मि ॥
इत्थमु पोद भवन्मय संविद-
दीधितिदारित भूरितमिस्त्रः।
मृत्यु यमान्तक कर्मपिशाचै-
नाऽथ नमोस्तु न जातु विभेमि ॥

प्रोदित सत्य विबोध मरीचि
प्रोक्षित विश्वपदार्थ सतत्त्वः ।
भाव परामृत निर्भर पूर्णे
त्वय्यऽहमात्मनि निर्वृतिमेमि ॥
मानस गोचरमेति यदैव
क्लेशदशाऽतनु तापविधात्री ।
नाथ ! तदैव ममत्वदभेद-
स्तोत्र पराङ्मृतवृष्टिर उदेति ॥
शंकर ! सत्यमिदं व्रतदान-
स्नानतपो भवतापविनाशी ।
तावक शास्त्र परामृतचिन्ता
स्यन्दति चेतसि निर्वृतिधाराः ॥
नृत्यति गायति हृष्यति गाढं
संविदियं मम भैरवनाथ ।
त्वां प्रियमाप्य सुदर्शनमेकं
दुर्लभ मन्यजनैः समयज्ञम् ॥
वसुरसपौषे कृष्णदशम्या-
मभिनवगुप्तः स्तवमिमम करोत् ।
येन विभुर्भवमरुसन्तापं
शमयति झटिति जनस्य दयालुः ॥



शंकर स्तुति

अतिभीषण कटुभाषण यमकिङ्कर पटली
कृतताडन परिपीडन मरणागम समये ।
उमया सह मम चेतसि यमशासन निवसन
शिवशंकर शिवजी शंकर हरमे हर दुरितम ।

अतिदुर्नय चटुलेन्द्रिय रिपुसंचय दलिते
पविकर्कश कटुजल्पित खलगर्हण चलिते ।
शिवया सह मम चेतसि शशिशेखर निवसन
शिवशंकर ....

भवभञ्जन सुररञ्जन खलवञ्चन पुरहन्
दनुजान्तक मदनान्तक रविजान्तक भगवन् ।
गिरिजावर करुणाकर परमेश्वर भयहन्
शिवशंकर ....

शक्रशासन कृतशासन चतुराश्रम विषयै
कलिविग्रह भवदुर्ग्रह रिपुदुर्बल समये ।
द्विज क्षत्रिय वनिता शिशु दरकम्पित हृदये
शिवशंकर ....

भवसम्भव विविधामय परिपीडितवपुषं
दयितात्मज ममताभर कुलषीकृत हृदयम् ।
कुरु मां निज चरर्णाच्चिन निरतं भव सततं
शिवशंकर ....

आय शरण च्यय पादन
विनय किञ नीमच्य
व्याकुलतायि मंज़ माता रछतम त्यय
व्याकुलतायि मंज़ बा'जि आपदायि मंज़
गृह् पीडायि मंज़ माता रछतम च्यय ।

ब्रह्मेन्द्र रुद्र हरिचन्द्र सहस्र रश्मि
स्कन्द द्विपानन हुताशन वन्दितायै
वागीश्वरी ! त्रिभुवनेश्वरी ! विश्वमात-
र्अन्तबहिश्च कृत संस्थितये नमस्ते ।

सरुस्वती त्रिपोरु सो'न्दरी ज़गतमाता
भवानीश्वरी छक आसुवुन्य च.यय
ब्रह्मा रुद्र इन्द्र सिर्यं चन्द्रम कुमार
विष्णु गणेश छुय पूज़ान च.यय
अन्दरु न्यबरु वा'तिथ त्रिभुवनस सा'रिसुय
गुल्य गंडिथ म्योन प्रणाम आ'सिनय च.यय आय०

यस्या प्रभावमतुलं भगवान नतो
ब्रह्मा हरश्च न हि वक्तुमलं बलं च
सा चण्डिकाखिलजगत्परिपालनाय
नाशाय चाशुभभयस्य मतिं करोतु ।

यमि सुन्द प्रभाव छुय हद रो'स्त आसुवुन
भगवान तु शेषुनाग छिनु वनिथ ह्यकान

ब्रह्मा त॒ शंकर तिम ति छिय हा'रिथ
चा'ञि शक्तिय ह्यंज़ महिमा न॒ जानान
सो'य चण्डी दीवी रछतन म्य
यो'स सा'रिसुय ज़गतस छि पालान
दीतन म्य तिछ़ बो'द्ध यह'य ज़गतमाता
यमि सा'त्य अशुभ भय छु नष्ट सपदान आय०

देवि ! त्र्यम्बक पत्नि पार्वती सति त्रैलोक्य
मातः शिवे
शर्वाणि त्रिपुरे मृडानि वरदे रुद्राणि कात्यायनि
भीमे भैरवि चण्डि शर्वरि कले !
कालक्षये शूलिनि
त्वत्पाद प्रणतानऽनन्य मनसः पर्याकुलान्पाहिनः

ही दीवी छक च॒ त्र्यम्बक॒ पत्नी
च॒यय वनान सती च॒यय पार्वती
त्रैलोकी हन्ज़ माता भगवती
च॒यय वर दिवान छख च॒ मृडानी
च॒यय त्रिपोर॒ सो'न्दरी च॒यय रुद्राणी
च॒यय भयानक रूप च॒यय शरवरी
च॒यय चंडी च॒यय त्रिशूल धारा'णी
च॒यय कला कालस नाश॒ करा'नी

त्वद्रूपैक निरूपण प्रणयिता बन्धोदृशोस्त्वदगुण
ग्रामाकर्रणनरागिता श्रवणयो रत्वत्संस्मृति श्चेतसि
त्वत्पादर्चन चातुरी करयुगे त्वत्कीर्तनं वाचि मे
कुत्राऽपि त्वदुपासन व्यसनिता मे देवि मा शाम्यतु

ही दीवी चा'ञ्ज़ि दर्शनुक म्य अभिलाष
प्रथ विज़ि नेत्रन मंज़ म्य रूज़ितन
चा'न्य गुण बोज़नुक तमुन्ना म्य आ'स्तन
प्रथ विज़ि रूज़ितन म्यान्यन कनन
चा'न्य नामु स्मरण च़्यतस मंज़ म्य गुरि गुरि
चा'न्य पादुय पूज़ा म्यान्यन अथन
चा'न्य कीर्तन करु वुन्य रूज़ितन वा'णी
उपासना चा'न्य मतु कम म्य गछ़ितन आय०

देवि ! त्वां सकृदेव यः प्रणमति क्षोणीभृतस्तंनम-
न्त्याऽजन्म स्फुरदङ्गाध्रपीठ विलुठत्कोटीर
कोटिच्छटाः
यस्त्वामऽर्चति सोर्च्चते सुरगणैर्यः स्तौतिसतस्तुयते
यस्त्वां ध्याति तं स्मरार्ति विधुरा ध्यायन्ति
वामभ्रुवः ।

युस पुरुष अकि लटि करि च़्यय कुन प्रणाम
तसुन्ज़ि ख़्रावि प्यठ छु इन्द्राज़ु नमान
युस पुरुष करान आसि माता चा'न्य पूज़ा
पूज़ान तस छि सा'री दिवता
युस पुरुष करान आसि माता चा'न्य स्तुता
तमि सुन्ज़ अस्तुतिः छि दिवता करान
युस पुरुष करान आसि माता चोनुय ध्यान
स्वर्गु चि अछ़ु रछ तस छि स्मराण आय०

किं किं दुखं दनुज दलिनि ! क्षीयत न स्मृताद्यां
का का कीर्तिः कुल कमलिनि ! ख्याप्यते न
स्तुतायाम

का का सिद्धि सुखरनुते प्राप्यति र्नाचितायां
कं कं योगं त्वायि न चिनुते चित्तमालम्बितायाम

कम सना दुख छि़ तिम ही दुखन गाल्वन्य
यिम गलन न् चान्ने स्मरणि स'त्य
को'स् छि़ नेकनामी यो'स् कुलस खाख'न्य
यो'स् न् बनि चान्ने स्तुतायि सा'त्य
को'स् को'स् छि सिद्धि ही सिद्धिदात्री
यो'स् न् प्राप्त सपदि चान्ने पूज़ायि सा'त्य
कम कम छि तिम यूग ही ज़गतमाता
यिम न् स्यद्ध बनन चात्रि चि़न्तन् सा'त्य आय०

ददातीष्टानभोगा न्क्षपयति रिपून्हन्ति विपदो
दहत्याधीन्न व्याधीन्शमयति सुखानिप्रतनुते
हटादऽन्र्तदुखं दलयति पिन्ष्टीषृविरहं
सकृदध्याता देवी किमिव निरवधं न कुरते।

मतलब छख दिवान दुश्मनन गालान
आप्दायन छक नाश् करान
मन किन्न रूगन माता च़यय गालान
दीह् चन व्याज़न सौ'म्रावान
संसार् च्य यिम सुख संप्दायि बजि
माता तिमन छय व्यस्तारान
अन्दरिम दु:ख त दा'द्य ज़ीवस च़यय गालान
यिम हय अकि लटि माता नाव चोन सो'रान
तिम कम सना पापव निशि छिन् मौ'कुलान
यिम सदा च़यय कुन गुलि गंडिथ छि रोज़ान

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि ।
दारिद्र्य दुःख भयहारिणी का त्वदन्या
सर्वोपकार करणाय सदाऽऽर्द्रचिता ॥

हो दुर्गे चा'न्य समरणि ज़ीवस
सा'री भय छि नाश सपदान
वा'रु पा'ठय करिय युस चा'न्य स्मरण
त्यलि छक ज्ञानच वथ हावान
दारिद्र भावय ब्ययि कठिन दो'ख तु दा'द्य
च़्यय रो'स्त कुस छुम म्य दूरु करान
उपकार छक करान तिमन सारिनुय ज़ीवन
यिम सदा च़्यय कुन गुल्य गंडिथ छि रोज़ान आय०

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं विधि हीनं च यद्गतम
त्वया तत्क्षम्यतां देवि कृपया परमेश्वरि ।

मन्त्रहीन आ'सिथ क्रियाहीन आ'सिथ
व्यधिहीन आ'सिथ यि केंछ़ाह पो'रुम
वो'न्य हय तथ सा'रिसुय हो परमीश्वरी
कृपायि किञ म्य आ'रितम माता बखुशुम

आ'सि आमित बुनिथ एकाग्र च़्यथ बुनिथ
छुस ध्यवान च़्यय हय पादन तल परन



॥ अथ ध्यानम् ॥

गौरीश्वराय भुवनत्त्रयकारणाय
भक्तिप्रियाय भवभीतिभिदे भवाय ।
शर्वाय दुःखशमनाय वृषभध्वजाय
रुद्राय कालदहनाय नमः शिवाय ॥



आधीनामगधं दिव्यं व्याधीनां मूलकृन्तनं
उपद्रवाणं दलनं महादेवं उपास्महे

[स्वर्गीयगोविन्दस्वामिना कश्मीरीभाषायां
विरचिता गुरुस्तुति]

शिव शङ्कर भव भय हर हर लगयो च़रणन् ।
गुरु लगयो पादि कमलन् सत् गुरु लगयो च़रितन् ॥

च़रणन् तल वार् वरतम वरदा छुक शरणन्
शरण्य च़यय आस कासतम मल म्य अन्तः करणन्
कर शङ्कर कर रटहम कर अर हर मरणन्
मर मर छुम ज़्यन मरनुक अमरेश्वर भगवन्
पादि कमलन तल म्य पालतम पालवुन छुक
कालहन्
हन्य हन्य च़्य शिव वछहथ यव दुय गल्य हन हन्
शिव०

दय अदुय द इ म्य गच्छ़तम कर दय दय निशि दिन
दीन दयाल कऩ म्य थावतम दीन वच़नन् त़ वदनन्
ज़र ज़र छुम ज़ो'ज़रनकुय ज़ीरनावतम मत़ हन्
हननावन हननावतम मन्य मो'ह युथ मुनियन्
देह पुष्ट मन तुष्ट थावतम देव जुष्ट छुक दुष्टहन्
पानै ईश्वर पानै तोषतम् पान वन्दयो तोषणन्

शिव०

अन्त कुस ज़ानि च़य अनन्तस सन्त व्यसरेय चिन्तनन्
क्याह निश्चय करि वेदान्तीय यत्य वेद लगि पन्थनन्
ब्रह्मादिक गय मो'हस तत्त्व चोन क्या व्यज़रन्
तत्पुरुष च़य तत्त्व म्य भावतम वथ म्य हावतम ज़ाननन्
गथ च़य सिद्ध शुद्ध मुनियन सथ छथ्‌म शाप मो'च़नन्
शाप मो'च़न ज्ञान लो'च़न पा'र्य आर्या लो'च़नन्

शिव०

तीज़ो रूप तेज़ छुक सो'म सूर्यन त अग्नन्
तोज़ो रूप च़य भासान बाह्य अन्तर यूगियन्
स्वप्रकाश स्वानुभवगम शान्त तीजः ज्ञानियन्
शिव म्यति दित कर्मसुम स्यज़ ज़ान यछ़ ज़नकादयकन्
ज़ान ज़ानुन ज़ाननीय च़य क्याह ब़ ज़ान चान्य ज़ानिव्यन्
ज्ञान वुपदीश वाऱ वरतम फ़र अज्ञान पटलन्

शिव०

निष्कारण सर्व कारण च्य कारण कारणन्
त्रेकार छुक च्य कारण सृष्ट स्थित तै प्रलयन्
च्य कर्ता च्य भर्ता च्य हर्ता जगतन्
व्याप्य व्यापक भाव व्यापीत च्य निरन्तर भवनन्
भो'जि क्याह वन च जि क्याह छुक युस न जोन
का'सि जा'न्य व्यन्
ज़ान सोरुय चा'न्य दया चा'न्य कृपा भगवन्
शिव०

दीव पूज्य छुक दीव पूजनीय पूजा व्यध पूजनन्
विजि विजि भो'जि पजि पूजहथ युथ पूजनख विष्णन्
भाव बामन फो'लना'विथ माल करह्य कोसमन
बो सो'मन्य व्यन लागह्य भ्यय गों'ध्य करहय् कोसमन
सो' वन्दि यछि पछि हन्दि पोष लागह्य पादि कमलन
पादि कमलन तल म्य पालतम तल ह्यथ क्यथ विघ्नन्
शिव०

शुद्ध निर्मल शिव पूजहथ यव सपन्य शुद्ध मन्
शुद्ध मन् च्योन ध्यान दा'रिथ शुद्ध स्फाटिक विकसन
नीलकण्ठस छु हटि वासुक चित्त आत्मस तमोगुण
सुधा धारा गङ्ग ह्यरि शेरि छय्य तारवञ सुजि नरकन्
शिवा धारमच वाम भागस चित् शक्ति चित् आत्मन
धर्म रूप बृषभ वगि त्रिशूल त्रि अवस्थाय अथि सन्
शिव०

श्वेत सुन्दर छो'त भस्मा तञि प्रकट योग सतोगुन्
रुण्ड माला गलि गन्डमच़ रोष को'रमुत इन्द्रियन्
क्याह् छय जटा मुकट शोभान छ़ल गो'ण्डमुत रजोगुण
टे'कि शाय हेरि डे'कि चन्द्रम प्रकटयुथ चयोन शुद्ध मन
दिक् वासन निर्वासन वास चयोन मन्य सुमनन
त्रिवास छुख ज्ञान बोज़तय त्रिकार रूप त्रिनयनन्
शिव०

माया तीत माया चान्य त्रिगुण सा'त्य विकसन
निर्गुण छुक गुण उल्लङ्घित माया गुण विलसन
भूत भावत भूत पंचक देह् खर को'र अह्मन
दह् इन्द्रिय मन बो'ध ह्याथ प्राणबल सा'त्य प्रसरण
सच्चिदानन्द रूप आत्मन ज़ीवभावस को'र शयन
तदात्म भाव देह् की लो'भ प्रकृत बल ज़ीवनन
शिव०

मो'ह ज़ाल सा'त्य ज़ीव गण्डनै आव कर्मन्यन बन्धनन
काम क्रोधन स्थित रटनस प्यठ मनस बोज़ त इन्द्रियन
द्वन्द्व भावत रागद्वेष सा'त्य काप्य लो'ग षट् शुत्रन
गुण सङ्ग सा'त्य इत गछ़िय लो'ग पुण्य पाप वश बांधज़
मो'कजारुक पाय चय़ शिव मोक्षदा छुक भक्तयन
भव बन्धन मो'कलावतम छुक चय़ भव ! भव भयहन्
शिव०

निष्यपञ्च च्योन सोरुय प्रपञ्च वाञ्छ छम कस बर् कन
हे हरे हर विरिञ्चि बोज़तम क्याह वन पञ्च दैवतन
वन च् क्याह कर् चञ्चल मन् संसार क्यन ख्येंचलन
पञ्चवदन मुकलावतम केंह अन्त छु न च्यान्य व्यन
कून् कून् कून् कुनोय तोषतम केंह अन्त छुन हेरि बुन
रुति मुख मुख सुख वरतम सुख सुन्दर दुःख हन्

शिव०

सम दितम संपदा यव सम सुम रोज़हा समयन
सम यस गछ़िय चान्य दया लग्य सुम स्यज़ संयन
सम्य समिरस् प्रथ गुण किञ समयन तय साधनन
सुम आहार सुम विहार सम निद्रा त् जागरण
संभालिथ पानस सुम सुम शुज़रिथ शायहन
लग्य समाध योग सम स्यज़ विजि् सत् गुरु वचनन्

शिव०

भक्ति प्रिय भक्ति दायक् दय युस इच्छहन भक्ति ज़न
भक्ति भावत् भक्ति भावनाय च्यय कुन लग्य निशि दिन
भक्ति वत्सल भक्ति छलबल् बल् फिरि गुड विषयन
दरि श्रद्धाय ध्यान धा'रिथ रटि प्राण बुद्ध चित्त् त् मन
यम नियम शम दम सम्य मन् सो'रि सुय दय क्षण क्षण
मन ज़ीनिथ पोज़ च़ीनिथ गछि ज़ीनिथ भवनन

शिव०

यस संस्रति पोत अचय मन सुस्त आस्यतन विभवन
लोर आस्यन अन्न धन्न घरबारन त सन्तनन
व्यवहार क.यन काम्यन प्यठ परद्यन हंज.य काम्य ज.न
प्रारब्धुक भोग भोगान् भोगवुन ज.न स्वप्नन
रागीज.न सा'र्यसय. सा'त्य त्यागित सर्व कामनन्
गच्छि संसार सर ता'रिथ लड करान सूह ज.न

शिव०

युदवै कां'सि ओरै यीयि भंग संग मेल्यस साधुज.न
साधुजन युस सम्य चित्त नाय ममताय निश आस्य भिन्न
भ्युन्न रुत क्रुत द्वन्द्व भावन छ्यन दिथ सर्व कामनन
शम दम ज्ञान विज्ञान सुस्त रुस्त कपटन त. कल्पनन
ब्रह्म तत्पर आस्य आस्यस परेहट सर्व विषयन
बो'ड़ दुर्लभ ब्रह्म रूप त्योग लभ्य ज.य बु ह्योह साधुजन

शिव०

युस कांह यछि पानस रुत क्रुत त्राव्य प्राव्य शुद्ध मन
शुद्ध मन भक्ति भावनाय कन थाव्य साधु वचनन
साधु वचनव प्राव्य जाग्रत ज़ाग्य ज़ाग ह्याथ समयन
समय वात्यस शम यम नियम् पानै ता'र्य तस मुच.रन
दीन दयाल हे कृपाल कां'स्य गथ छयन चाञ्य ब्यन
सत् भाव छम सथ चा'ञ्यी सत् गथ दिम भगवन

शिव०

त्यल्य च़यूनुम भो'जि़ क्याह छुस यलि वा'च़म च़ेनवञ

च़ेनञ आयम दया आ'ञ्य च़ेननावान सेवकन

भक्त युदवै मुक्त थावहम मुक्त छुस निष बन्धनन

सुप्रकाशत अविनाशी मा'श्यविथ ज़्यन मरनन

सत चि़त्त आनन्द रूपस स्थित त्यथ ह्यथ निर्गुण गुण

प'ज़ दया चा'ञ भगवन करि क्याह म्या'ञ वन वन

शिव०

शांत निर्मल भांत छम चा'ञ मानतम सार वन वन

अख शो'भ दृष्टि शिव करतम नाव चोन शुभाशुभन

शुभदायक शुभ दृष्टि चा'ञ सा'रय शूभ शूभियन

शूभवुन च़्यय त्रन भवनन शूभ्रहथ पोष वर्षणन

शूभरावतम ज्ञान सम्पदा शूभ यथ यियि ज़गतन

शूभ सा'रय चा'ञ दया चा'ञ कृपा भगवन

शिव०

अविनाश ब'ढ आश पूरतम नाश करहा कल्पनन

आशा पूर' आशा चा'ञ आश छम राश पपनन

घटि हन्दि घाश चि़त्त प्रकाश घाश अनतम नेत्रन

नाशविथ रूज़ सर्व कल्पनन नाशविथ सर्व वासनन

प्रकाश शान्त सु प्रकाश च़्यय घाशुर घाशरन

पूर्ण प्रसाद गुरु प्रसाद करु प्रसाद भगवन

शिव०

संसारचिय छो'च् आशा शुर्य मुर्य तय सन्तनन
भा'य बन्ध तय धन्न संपत घर बार तय स्त्रीजन्
सोर असोर भ्रम सोरुय मृगतृष्णा यिथ जन्
शिव च्य म्या'ञ शुर्य मुर्य तय भा'य बन्ध तय सा'री ज
च्यय मोल मा'ज च्यय घरबार च्यय संपत द्वार धन्न
च्यय सोरुय च्यय सारय सहार रोज्तम भगवन
शिव०

लूभ छुम न स्वर्गन हुन्द क्षूभ तिन् भ्यय नरकुन
रुत क्रुत सो'ख दो'ख भूगान फल पनञ्यन कर्मन
शिव नाव सा'त्य थर थर अच्छान दूरि यम किंकरण
शिव भक्त संज् सहाय छांडान माय पनञ्य देवगण
अख शो'भ दृष्ट शिव छम चा'ञ लछ विभवन त स्वर्ग
सो'य शुभ दृष्ट शिव करतम पान्य वरतम भगवन
शिव०

नव नाथीश्वर च्य छुक नव निघान छुक सेवकन
नव्य खो'त नोव ब वुछहथ लगि नोव नोव नवनन
नोव गंडिथ नोव रटिथ नोव प्रणव नोव व्याहरण
नोव दक्षिपाल ह्यथ रोज्तम ईश रच्छ निशि विघ्नन
नवदुर्गा करि पक्षि म्योन युस रक्षक शरणन
नोव द्वार पोर खस वुफ ह्यथ नोव वुन्य शिव भवनन
शिव शंकर भव भय हर हर लगयो च्रणन् ।
गुरु लगयो पादि कमलन सत गुरु लगयो च्रितन् ॥

" ॐ नमो भवान्यै "

ॐ अरि-शंख-कृपाण-खेट-बाणान्। सुधनुः शुलक-तर्जनीं दधाना। भवतां महिषोत्तमाङ्ग संस्था नवदूर्वा-सदृशी श्रियेऽस्तु दुर्गा॥ ॐ शंख-त्रिशूल-शर-चापकरां त्रिनेत्रां तिग्मेतरांशु-कलया विलसत्-किरीटाम्। सिंह-स्थिताम्-असुर-सिद्धनुतां च दुर्गा दूर्वानिभां दुरित-दुःखहरां नमामि। ॐ अकुल-कुल-पतंती चक्रमध्ये स्फुरंती मधुर-मधु पिवंती कंटकान्-भक्षयंती। दुरितम्-अपहरंती साधकान्-पोषयन्ती जयति जगति देवी सुन्दरी क्रीडयंती। चतु-र्भुजाम्-एकवक्त्रां पूर्णेन्दु-वदन-प्रभाम्। खड्गशक्ति-धरां देवीं वरदा-भयपाणिकाम्। प्रेत-संस्थां महारौद्रीं भुजगेनो-पर्वतिनीम्। भवानीं कालसंहार-बद्धमुद्रा-विभूषिताम् जगत्-स्थितिकरीं ब्रह्मा-विष्णु-रुद्रादिभिः सुरैः। स्तुतां तां परमेशानीं नौम्यहं विघ्न-हारिणीम्

॥ ॐ नमो भवान्यै ॥

ॐ कैलाश शिखरे रम्ये देवदेवं महेश्वरम्। ध्यानोप-रतमासीनं प्रसन्न-मुखपंकजम्। सुरासुर-शिरो-रत्न-रंजितांघ्रि-युगं प्रभुम्। प्रणम्य शिरसा नंदी बद्धां-जलिर्-अभाषत।

श्री नंदिकेश्वर-उवाच

देव-देव जगत्-नाथ संशयोस्ति महान्-मम। रहस्यम् एकम्-इच्छामि प्रष्टुं त्वां भक्त-वत्सल। देवतायाः त्वया कस्याः स्तोत्रम्-एतत्-दिवानिशम्। पठ्यते -विरतं नाथ त्वत्तः किम्-अपरं महत्। इति पृष्टः तदा देवो नंदिकेन जगत्-गुरुः, प्रोवाच-भगवान्-एको विकसन्-नेत्र पंकजः।

श्री भगवन्-उवाच

साधु-साधु गणश्रेष्ठ पृष्टवान्-असि-मां च यत। स्कंदस्यापि च यत्-गोप्यं रहस्यं कथयामि तत्। पुरा कल्पक्षये लोकान् सिसृक्षु-र्मूढ़-चेतसः। गुणत्रय मयी शक्तिर्-मूल प्रकृति-संज्ञिता। तस्याम्-अहं समुत्पन्नः तत्त्वैर् तैर्-महदादिभिः। चेतनेति ततः शक्तिर्-मां काप्या-लिंग्य तस्थुषी। हेतुः संकल्प-जालस्य मनोधिष्ठायिनी शुभा इच्छेति परमा शक्तिर्-उन्-मिमील ततः परम्। ततो वाक्-इति विख्याता शक्तिः शब्दमयी पुरा। प्रादुर्-आसीत् -जगत्-माता वेदमाता सरस्वती। ब्राह्मी च वैष्णवी सैंद्री कौमारी पार्वती शिवा। सिद्धिदा शांता सर्वमंगल-दायिनी। तयैतत्-सृज्यते विश्वम्

-अनाधारं च धारयति। तथैतत्-पाल्यते सर्वं तस्याम्-एव प्रलीयते। अर्चिता-प्रणता ध्याता सर्व -भाव - विनिश्चितैः। आराधिता स्तुता सैव सर्वसिद्धि-प्रदायिनी। तस्या-अनुग्रहात्-एव ताम्-एव स्तुतवान् अहम्। सहस्रैर्-नामभिर्-दिव्यैः-त्रैलोक्य-प्राणि पूजितैः। स्तवेनानेन संतुष्टा माम्-एव प्रविवेश सा। तत्-आरंभ्य मया प्राप्तम् ऐश्वरं पद्म-उत्तमम् तत् प्रभावात् मया सृष्टं जगत्-एतत् चराचरम्। ससुरा-सुर-गंधर्व यक्षरा-क्षस-मानवम्। सपन्नगं ससमुद्रं सशैल-वनकाननम्। सराशि-ग्रह-नक्षत्रं पंच-भूत-गुणान्वितम्। नंदि -नाम-सहस्रेण-स्तवेनानेन सर्वदा। स्तुवे परापरां शक्तिं ममानुग्रह-कारिणीम्। इत्युक्तोप-रतं देवं चराचर-गुरुं विभुम्। प्रणम्य शिरसा नंदी प्रोवाच परमेश्वरम्।

श्री नंदिकेश्वर उवाच

भगवन्-देव-देवेश लोकनाथ जगत्-पते। भक्तोस्मि तव दासोस्मि प्रसादः क्रियतां मयि। देव्याः स्तवम्-इमं पुण्यं दुर्लभं-यत्-सुरैर्-अपि। श्रोतुम्-इच्छाम्यहं देव प्रभावम्-अपि चास्य तु।

श्री भगवान् उवाच

श्रृणु नंदिन् महाभाग स्तव-राजम्-इमं शुभम्।
सहस्त्रैर्-नामभिर्-दिव्यैः सिद्धिदं सुखमोक्षदम्।
शुचिभिः प्रातर्-उत्थाय पठितव्यं समाहितैः।
त्रिकालं श्रद्धया युक्तैर्-नातः परतरः स्तवः।
ॐ अस्य श्रीभवानी-नाम-सहस्त्र-स्त-वराजस्य श्रीभगवान्-महादेव ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। आद्या शक्तिः। श्रीभगवती भवानी देवता। ह्रीं बीजम्। श्रीं शक्तिः। क्लीं कीलकम्। श्री भगवती भवानी-सन्तोषनाथं सकलकामना-सिद्ध्यर्थे पाठे विनियोगः।

अथ करन्यासः

ॐ एकवीरायै अंगुष्ठाभ्यां नमः

ॐ मायायायै तर्जनीभ्यां नमः

ॐ पार्वत्यै मध्यमाभ्यां नमः।

ॐ गिरिशप्रियायै अनामिकाभ्यां नमः

ॐ गौर्यै कनिष्ठिकाभ्यां नमः

ॐ करालिन्यै करतल-कर पृष्ठाभ्यां नमः

अथ षड्-अङ्गन्यासः

ॐ एकवीरायै हृदयाय नमः

ॐ महामायायै शिरसे स्वाहा

ॐ पार्वत्यै शिखायै वषट्

ॐ गिरिश प्रियायै कवचाय हुम्,

ॐ गौर्यै नेत्र-त्रयाय वौषट्

ॐ करालिन्यै-अस्त्राय फट्

अथध्यानम्

अर्धेन्दु-मौलिम्-अमलाम्-अमराभिवन्द्याम्' अम्भोज-पाश - सृणि-रक्तकपाल-हस्ताम्। रक्तांग-राग-वसना भरणां त्रिनेत्राम्, ध्याये शिवस्य वनितां -मद-विहवलांगीम्।

ॐ बालार्क-मण्डलाभासां चतुर्-बाहुं त्रिलोचनाम्। पाशांकुश-शरां चापं धारयंतीं शिवां भजे।

ओ३म् श्री ईश्वर उवाच

ओ३म् महाविद्या, जगत्-माता, महालक्ष्मीः, शिवप्रिया। विष्णु-माया, शुभा, शान्ता, सिद्धा, सिद्ध-सरस्वती। क्षमा, कान्तिः प्रभा, ज्योत्स्ना,

पार्वती, सर्व-मंगला, हिंगुला, चण्डिका, दान्ता, पद्मा, लक्ष्मीः, हरिप्रिया। त्रिपुरा-नन्दिनी, नन्दा, सुनन्दा, सुर-वन्दिता। यज्ञविद्या, महा-माया, वेदमाता, सुधाधृतिः। प्रीतिप्रया, प्रसिद्धा, च मृडानी, विन्ध्य-वासिनी। सिद्ध-विद्या, महा-शक्तिः, पृथ्वी, नारद-सेविता। पुरु-हूत-प्रिया, कान्ता, कामिनी, पद्ममलोचना। प्रह्लादिनी, महामाता, दुर्गा, दुर्गति-नाशिनी। ज्वालामुखी, सुगोत्रा, च ज्योतिः, कुमद-हासिनी। दुर्गमा, दुर्लभा, विद्या, स्वर्गतिः, पुरवासिनी। अपर्णा, शाम्बरी माया, मदिरा, मृदुहासिनी। कुल-वागीश्वरी, नित्या - नित्य - क्लिन्ना, कृशोदरी। कामेश्वरी, च नीला, च भीरुण्डा, वह्निवा-सिनी। लम्बोदरी, महाकाली, विद्या-विद्येश्वरी, तथा नरेश्वरी, च सत्या, च सर्व-सौभाग्य-वर्धिनी संकर्षणी, नार-सिंही, वैष्णवी, च महोदरी। कात्या-यनी, च चम्पा, व सर्व-सम्पत्ति-कारिणी। नारायणी, महानिद्रा, योगनिद्रा, प्रभावती। प्रज्ञा पारमिता, प्रज्ञा, तारा, मधु-मती, मधु। क्षीणरार्णव -सुता, हाला, कालिका, सिंह-वाहना। ॐकारा, च सुधाकारा, चेतना, कोपना, कृतिः। अर्ध-बिंदु -धरा, धारा, विश्वमाता, कलावती। पद्मावती

सुवस्त्रा च प्रबुद्धा च सरस्वती। कुंडासनी जगत् -दात्री बुद्धमाता जिनेश्वरी। जिनमाता जिनेन्द्रा, च शारदा, हंसवाहना। राज्य लक्ष्मीः, वषट्-कारा, सुधाकारा, सुधोत्-सुका। राजनीतिः, त्रयीवार्ता, दंडनीतिः, क्रियावती। सत्-भूतिः, तारिणी, श्रद्धा, सत्-गतिः सत्-परायणा। सिंधुः मंदाकिनी, गंगा, यमुना, च सरस्वती। गोदावरी विपाश, च कावेरी, च शताहदा। सरयूः, चन्द्र-भागा, च कौशिकी, गण्डकी, शुचिः। नर्मदा कर्मनाशा, च चर्मण्वत्यथ, देविका। वेत्रवती, वितस्ता च वरदा, नर-वाहना, सती, पतिव्रता साध्वी, सुचक्षुः, कुण्ड-वासिनी। एक चक्षुः, सहस्राक्षी, सुश्रेणिः, भग-मालिनी, सेना-श्रेणिः पताका, च सुव्यूहा, युद्ध - कांक्षिणी। पताकिनी, दया, रंभा, विपंची, पंचम-प्रिया। परापरकला-कांता, त्रिशक्तिः, मोक्ष-दायिनी। ऐंद्री, महेश्वरी, ब्राह्मी, कौमारी, कुलवासिनी इच्छा, भगवती, शक्तिः कामधेनुः कृपावती। वज्रायुधा, वज्रहस्ता, चण्डी, चण्ड-पराक्रमा, गौरी सुवर्णवर्णा, च स्थिति-संहार-कारिणी। एकानेका, महेज्या, च शतबाहुः, महाभुजा। भुजंग-भूषणा भूषा, षट्चक्र-क्रम-वासिनी। षट्चक्र-भेदिनी,

श्यामा, कायस्था, काय-र्वाजता। सुस्मिता सुमुखी क्षामा, मूल-प्रकृतिः, ईश्वरी। अजा, च बहुवर्णा च पुरुषार्थ - प्रवर्तिनी। रक्ता, नीला, सिता, श्यामा, कृष्णा, पीता, च कर्बु॑रा। क्षुधा, तृष्णा, जरा, वृद्धा, तरुणी, करुणालया कला, काष्ठा, मुहूर्ता, च निमेषा, काल-रूपिणी। सुवर्ण-रसना-नासा, चक्षुः स्पर्शवती, रसा गन्धप्रिया, सुगन्धा, च सुस्पर्शा, च मनोगतिः। मृग-नाभिः मृगाक्षी, च, कर्पू॑रा-मोद-धारिणी। पद्म-योनि सुकेशी, च सुलिंगा, भगरूपिनी। योनि - मुद्रा, महामुद्रा, खेचरी, खग-गामिनी। मधुश्रीः, माधवी -वल्ली, मधु-मत्ता, मदोद्धता। मातङ्गी, शुक-हस्ता, च पुष्पबाणा, इक्षुचापिनी। रक्तांबर-धरा, क्षीबा, रक्त-पुष्पा-वतंसिनी। शुभ्रा-म्बरधरा, धीरा, महाश्वेता, वसु-प्रिया। सुवेणी, पद्महस्ता च मुक्ताहार-विभूषणा। कर्पू॑रा-मोद-निश्वासा, पद्मिनी, पद्म-मन्दिरा। खड्गिनी, चक्र-हस्ता, च भुशुण्डी, परिधायुधा। चापिनी, पशाहस्ता, च त्रिशूल-वर-धारिणी। सुबाणा, शक्ति-हस्ता, च मयूर-वरवाहना। वरायुध-धरा, वीरा, वीर-पान - मदोत्कटा। वसुधा, वसुधारा, च जया, शाकम्भरी, शिवा। विजया, च जयंती, च

सुस्तनी, शत्रु-नाशिनी। अन्तर्वत्नी वेद-शक्तिः, वरदा, वर-धारिणी। शीतला, च सुशीला, च बाल-ग्रह-विनाशिनी। कौमारी, च सुपर्वा, च कामाख्या, काम-वन्दिता। जालान्धर-धरा, ऽनन्ता, कामरूप-निवासिनी। काम-बीज-वती-सत्या, सत्य-धर्म-परायणा। स्थूल-मार्ग-स्थिता। सूक्ष्मा, सूक्ष्म-बुद्धि-प्रबोधिनी, षट्-कोणा, च त्रिकोणा, च त्रिनेत्रा, त्रिपुर - सुन्दरी। वृषप्रिया, वृषारूढा, महिषा-सुर-घातिनी। शंभु-दर्पहरा दीप्ता, दीप्त-पावक-सन्निभा। कपाल-भूषणा, काली, कपाल-माल-धारिणी। कपाल-कुण्डला, दीर्घा, शिवदूती धन-ध्वनिः। सिद्धिदा, बुद्धिदा, नित्या, सत्यमार्ग-प्रबोधिनी। कम्बु-ग्रीवा, वसुमती छत्र-छाया-कृतालया। जगत्-गर्भा, कुण्डलिनी, भुजगाकार-शायिनी। प्रोल्लसत्-सप्तपद्मा, च नाभिनाल - मृणालिनी। मूलाधारा, निराकार, वह्निकुण्ड - कृतालया, वायुकुण्ड - सुखासीना, निराधारा, निराश्रया। श्वासोत् श्वास-गतिः, जीवा-ग्राहिणी, वह्नि-संश्रया। वल्ली-तंतु-समुत्थाना, षड्-रसा-स्वाद-लोलुपा। तपस्विनी, तपः सिद्धिः, तपसा-सिद्धि-दायिनी। तपो-निष्ठा, तपो-युक्ता, तापसी, च तपः प्रिया। सप्तधातु-मयी

मूर्तिः, सप्तधात्वंतरा-श्रया, देहपुष्टिः, मनः पुष्टिः अन्नपुष्टिः, बलोद्धता। औषधिः, वैद्यमाता, च, द्रव्य-शक्तिः, प्रभाविनी। वैद्या, वैद्य-चिकित्सा, च सुपथ्या, रोग-नाशिनी। मृगया, मृगमांसादा, मृगत्वक् मृगलोचना। वागुरा, बंधरूपा, च वधरूपा, वधोद्धता। बंदी, बंदिस्तुता, कारा, कारा-बंधविमोचिनी। श्रृंखला, खलहा, विद्या, दृढबन्ध - विमोचिनी। अम्बिका, अम्बालिका, चाम्बा, स्वक्षा, साधुज - नार्चिता। कौलिकी कुलविद्या, सुकुला, कुल-पूजिता। कालचक्र-भ्रमा भ्रान्ता, विभ्रमा भ्रम-नाशिनी। वात्याली, मेघमाला च सुवृष्टिः, सस्य-वर्धिनी। अकारा, च इकारा, च उकारा, ऐकार-रूपिणी। ह्रींकारी, बीजरूपा च क्लींकारां-बरवासिनी। सर्वाक्षर-मयी-मूर्तिः, अक्षरा, वर्णमालिनी। सिन्दूरा-रुणवर्णा, च सिन्दूर-तिलक-प्रिया। वश्या, च वश्यबीजा, लोक-वश्य-विभावनी नृपवश्या, नृपसेव्या, नृपवश्यकरी, प्रिया। महिषी नृपमान्या च नृमान्या नृपनन्दिनी, नृपधर्म-मयी, धन्या, धन-धान्य-विवर्धिनी। चतुर्वर्ण-मयी-मूर्तिः, चतुर्वर्णैः-सुपूजिता। सर्व-धर्म-मयीसिद्धिः, चतुराश्रम-वासिनी। ब्राह्मणी, क्षत्रिया, वैश्या, शूद्रा, चा-वर-वर्णजा। वेदमार्ग-

रता, यज्ञा, वेद-विश्व-विभाविनी। अस्त्र-शस्त्र-मयी-विद्या, वर-शास्त्रास्त्र-धारिणी। सुमेधा, सत्यमेधा, च भद्रकाली, अपराजिता। गायत्री, सत्-कृतिः, संध्या, सावित्री, त्रिपदा-श्रया। त्रिसंध्या, त्रिपदी, धात्री, सुर्पवा, साम-गायनी। पांचाली, बालिका बाला, बाल-क्रीड़ा, सनातनी। गर्भाधार-धरा, शून्या, गर्भ-शय-निवासिनी। सुरारिघातिनी, कृत्या, पूतना, च तिलोत्तमा। लज्जा, रसवती, नंदा, भवानी, पापनाशिनी। पट्टांबर-धरा, गीति सुगीतिः, ज्ञान-लोचना। सप्त-स्वरमयी, तन्त्री, षड्-ज-मध्यमदे-वता। मूर्छाना, ग्रामसंस्थाना, स्वच्छ-स्वस्थान-वासिनी। अट्टाट्ट-हासिनी, प्रेता, प्रेतासन-निवासिनी। गीत-नृत्य-प्रिया, कामा, तुष्टिदा, पुष्टिदा-क्षया। निष्ठा, सत्य-प्रिया, प्रज्ञा, लोकेशी, च सुरोत्तमा। सुविषा, ज्वालिनी, ज्वाला, विश्व-मोहार्ति-नाशिनी। विषारिः, नाग-दमनी, कुरु-कुल्ला-अमृतोद्भवा। भूत-भीतिहरा, रक्षा। भूता-वेश-विनाशिनी। रक्षोध्नी, राक्षसी, रात्रिः, दीर्घ-निद्रा-निवारिणी। चन्द्रिका, चन्द्रकांतिः, च सूर्यकांतिः, निशाचरी। डाकिनी, शाकिनी, शिष्या, हाकिनी, चक्रवाकिनी। सितासित-प्रिया

स्वंगा, सकला, वनदेवता। गुरु-रूपधरा, गुर्वी मृत्यु-मारी, विशारदा। महामारी, विनिन्द्रा, च तंद्रा, मृत्युविना-शिनी, चन्द्रमण्डल-संकाशा, चन्द्रमंडल-वासिनी। अणिमादि-गुणोपेता, सुस्पृहा, काम-रूपिणी, अष्टसिद्धिप्रदा, प्रौढा, दुष्टदानव-घातिनी। अनादिनिधया, पुष्टिः, चतुर्बाहुः, चतुर्मुखी। चतुः समुद्र-शयना, चतु-वर्ग-फलप्रदा काशपुष्प-प्रतीकाशा, शरत्-कुमुद लोचना। भूता, भव्या, भविष्या, च शैलजा, शैल-वासिनी। वाममार्ग-रता, वामा, शिव-वामाङ्ग - वासिनी। वामाचार-प्रिया, तुष्टिः लोपामुद्रा - प्रबोधिनी। भूतात्मा, परमात्मा च, भूत-भव्य-विभाविनी। मंगला, च सुशीला, च परमार्थ प्रबोधिनी। दक्षिणा, दक्षिणा-मूर्तिः, सुदीक्षा, च हरि-प्रसूः। योगिनी, योग-युक्ता, च योगाङ्गा, ध्यान-शालिनी योग-पट्टधरा, मुक्ता, मुक्तानां - परमागतिः। नारसिंही-सजन्मा, च त्रिवर्ग-फल-दायिनी। धर्मदा, धनदा, चैका, कामदा, मोक्षदा, द्युतिः। साक्षिणी, क्षणदा, दक्षा, मोक्षदा, कोटि-रूपिणी। क्रतुः कात्यायिनी, स्वच्छा, स्वच्छन्दा, च कवि-प्रिया। सत्यागमा, बहिस्था, च काव्य-शक्तिः कवि-त्वदा। मीना-पुत्री, सती, माता, मैनाक-

भगिनी, तडित् । सौदामिनी, सुदामा, च सुदामा धाम-शालिनी । सौभाग्य-दायिनी, द्यौश्च, सुभगा, द्युति-वर्धिनी । श्रीकृत्तिवसना, चैव कं-काली, कलिनाशिनी । रक्तबीज - वधोदृप्ता, सुतन्तुः, बीजसन्ततिः । जगत्-जीवा, जगत्-बीजा, जगत्-त्रय-हितैषिणी । चामीकर-रुचिः चान्द्री, साक्षया षोडशीकला, यत्-तत्-पदानु-बन्धा, च यक्षिणी, धनदार्जिता । चित्रिणी, चित्रमाया, च विचित्रा भुवनेश्वरी । चामुण्डा, मुण्ड-हस्ता, चण्डमुण्डव-धोद्धुरा । अष्टमी, एकादशी, पूर्णा, नवमी, च चतुर्दशी । अमा-कलशहस्ता, च पूर्णकुम्भ-पयोधरा अभीरुः, भैरवी, भीरुः, भीमा, त्रिपुर - भैरवी, महारुण्डा, च रौद्री, च महा भैरवपूजिता । निर्मुण्डा, हस्तिनी, चण्डा, कराल - दशनानना । कराला, विकराला, च घोरा घुर्घुर-नादिनी । रक्तदन्ता, ऊर्ध्वकेशी, च बन्धूक - कुसुमा-रुणा । कादम्बरी, पटासा, च काश्मीरी, कुंकुमप्रिया क्षान्तिः, बहु-सुवर्णा, च मतिः, बहु-सुवर्णदा । मातंगिनी, वरारोहा, मत्त-मातंग-गामिनी । हंसा, हंसगतिः, हंसी, हंसोज्ज्वल-शिरोरुहा, पूर्ण-चन्द्र मुखी, श्यामा स्मितास्या, श्याम-कुन्तला । मषी, च लेखनी, लेखा, सुलेखा, लेखक-प्रिया । शंखिनी,

शंख-हस्ता, च जलस्था, जलदेवता। कुरुक्षेत्रा-
वनिः काशी, मथुरा, काञ्ची, अवन्तिका।
अयोध्या, द्वारिका, माया, तीर्था, तीर्थ-कर प्रिया
त्रिपुष्करा, - अप्रमेया, च कोशस्था, कौशवासिनी
कौशिकी, तु कुशावर्ता, कौशाम्बी, कोश-वर्धिनी
कोशदा, पद्मकोशाक्षी, कुसुम्भ - कुसुम - प्रिया।
तोतुला, च तुला कोटि, कोटिस्था, कोटरा-श्रया
स्वयंभूः, च सुगुप्ता, च सुरूपा, रूपवर्धिनी।
तेजस्विनी, सुभिक्षा, च बलदा, बलदायिनी।
महाकोशी, महावार्ता, बुद्धिः सत्-असदात्मिका।
महाग्रह-हरा, सौम्या, विशोका, शोक-नाशिनी
सात्विकी, सत्व-संस्था, च राजसी, च रजोवृता।
तामसी, च तमोयुक्ता, गुण-त्रय-विभाविनी।
अव्यक्ता, व्यक्तरूपा, च वेद विद्या, च शाम्भवी
शंकरा-कल्पिनी, कल्पा, मन संकल्प-संततिः।
सर्वलोकमयी, शक्तिः सर्व-श्रवण-गोचरा। सर्व-
ज्ञानवती, वाँछा, सर्व-तत्वाव-बोधिनी। जागृतिः,
च सुषुप्तिः, च, स्वप्नावस्था, तुरीयका, त्वरा
मन्दगतिः, मन्दा, मदिरा-मोद-धारिणी। पानभूमिः
पानपात्रा, पानदान-करोद्यता। अघूर्णा-रुण-नेत्रा,
च किंचित्-अव्यक्त-भाषिणी। आशापूरा, च
दीक्षा च दक्षा दीक्षित पूजिता। नागवल्ली,

नागकन्या, भोगिनी, भोग-वल्लभा। सर्व-शास्त्रमयी विद्या, सुस्मृतिः, धर्म-वादिनी। श्रुतिः, स्मृतिधरा ज्येष्ठा, श्रेष्ठा, पाताल-वासिनी। मीमांसा, तर्कविद्या, च सुभक्तिः, भक्त-वत्सला। सुनाभिः, यातना, जातिः, गम्भीराऽभाव-वर्जिता। नाग-पाशधरा, मूर्तिः, अगाधा, नाग-कुण्डला। सुचक्रा, चक्र-मध्यस्था, चक्रकोण-निवासिनी। सर्व-मन्त्रमयी, विद्या, सर्व-मन्त्राक्षरा -वलिः। मधु-स्रवा, स्रवन्ती, च, भ्रामरी, भ्रमरा-लका, मातृ-मण्डल-मध्यस्था, मातृमण्डल-वासिनी। कुमार-जननी क्रूरा, सुमुखी, ज्वर-नाशिनी। अतीता, विद्यमाना, च भाविनी, प्रीतिमंजरी। सर्व-सौख्यवती युक्तिः, आहार-परिणामिनी। निधाना-पंच-भूतानां, भव-सागर-तारिणी। अक्रूरा, च ग्रहवती, विग्रहा, ग्रहवर्जिता रोहिणी, भूमि-गर्भा-च, कालभूः, काल-वर्तिनी। कलंक-रहिता, नारी, चतुः - षष्ट्य - मिधावती। जीर्णा, च जीर्णवस्त्रा, च नूतना, नव-वल्लभा अजरा, च, रतिः, प्रीतिः, अतिराग-विवर्धिनी पंच-वातगति-भिन्ना, पंचश्लेष्मा-शायाधरा, पंच-पित्तावती-शक्तिः, पंच-स्थान-विभावनी। उदक्या च वृषस्यंती, बहिः प्रस्र-विणी त्र्यहा। रजः

शुक्र-धरा-शक्तिः, जरायुः-गर्भधारिणी । त्रिकालज्ञा त्रिलिंगा, त्रिमूर्तिः, त्रिपुर-वासिनी । अरागा, शिवतत्वाच, काम-तत्वानु-रागिणी । प्राची, अवाची, प्रतीची-दिक्, उदीची-दिक्, विदिक-दिशा । अहं कृतिः, अहंकारा, बालमाया, बलिप्रिया । स्त्रुक्-स्त्रुवा, सामिधेनी च, सुश्रद्धा, श्राद्ध-देवता । माता, मातामही, तृप्तिः, पितृ-माता, पितामही । स्नुषा, दौहित्रिणी, पुत्री, पौत्री, नप्त्री शिशु-प्रिया । स्तनदा, स्तनधारा, च विश्व-योनिः, स्तनंधयी । शिशूत्संग-धरा, दोला, दोला-क्रीड़ा-भिनन्दिनी । उर्वशी, कदली, केका, विशिखा, शिखि-वर्तिनी । खट्वांग-धारिणी, खट्वा, बाण-पुंखानु-वर्तिनी । लक्ष्य-प्राप्तिः, करा-लक्ष्या, लक्ष्या, च शुभलक्षणा । वर्तिनी, सुपथा-चारा, परि-खा, च खनिर्वृतिः । प्राकार-वलया, वेला, मर्यादा च महोदधौ । पोषणी, शेषणी शक्तिः, दीर्घ-केशी, सुलोमशा । ललिता, माँसला, तन्वी । वेद-वेदांगधारिणी । नरासृक्-पानमत्ता, च नर-मुण्डास्थि-भूषणा । अक्ष-क्रीड़ा-रतिः शारी, शारिका, शुक-भाषिणी । शांबरी, गारुडी-विद्या, वारुणी, वरुणार्चिता : वाराही, तुण्ड-हस्ता, च दंष्टोद्धृत-वसुन्धरा मीन

-मूर्ति-धरा, मूर्ता, वदान्या, प्रतिमा - श्रया।
अष्टमूर्तिः, निधीशाः, च शालिग्राम-शिला, शुचिः
स्मृतिः, संस्कार-रूपा च, सुसंस्कारा च संस्कृतिः
प्राकृता, देशभाषा च गाथा, गीतिः, प्रहेलिका
इडा, च पिंगला, पिंगा सुषम्णा, सूर्य-वाहिनी
शशि-स्रवा, च तालुस्था, काकिनी, मृत-जीवनी
अणुरूपा, बृहत् - रूपा, लघु-रूपा, गुरु-स्थिरा,
स्थावरा, जंगमा-देवी, कृत-कर्म-फलप्रदा। विषया
क्रान्त देहा च निर्विशेषा, जितेन्द्रिया, विश्वरूपा
चिदानन्दा, परंब्रह्म-प्रबोधिनी। निर्विकारा, च
निर्वैरा, विरतिः, सत्य-वर्धिनी। पुरुषाज्ञा, च
भिन्ना, च क्षान्तिः, कैवल्य-दायिनी। विविक्त-
सेविनी, प्रज्ञा, जनयित्री, बहुश्रुतिः। निरीहा, च
समस्तैका, सर्व-लोकैक-सेविता। सेवा, सेवा-प्रिया,
सेव्या सेवा-फल-विवर्धिनी। कलौ-कल्कि-प्रिया,
काली, दुष्ट - म्लेच्छ - विनाशिनी। प्रत्यंचा, च
धनुर्-यष्टिः, खड्गधारा, दुरानतिः। अश्वप्लुतिः
च वल्गा, च सृणिः, सन्मत्त-वारुणा। वीरभूः,
वीरमाता च, वीरसूः, वीर-नन्दिनी। जयश्रीः जय-
दीक्षा च जयस्था, जयवर्धिनी। सौभाग्य-सुभगाकारा
सर्व-सौभाग्य-वर्धिनी, क्षेमंकरी, सिद्धिरूपा, सत्कीर्तिः
पथिदेवता। सर्व-तीर्थमयी-मूर्ति; सर्वदेवमयी-प्रभा,
सर्वसिद्धि-प्रदा-शक्ति; सर्वमंगल-मंगला।

पुण्यं सहस्र-नामेदम्-अम्बाया: रुद्र-भाषितम्। चतुर्वर्ग प्रदं सत्यं नन्दिकेन प्रकाशितम्। नात: परतरो मन्त्रो नात: परतर: स्तव:। नात: परतरा-विद्या तीर्थं नात: परं परम्। ते धन्या: कृत-पुण्यास्ते त एव भुवि पूजिता:, एक भावं मुदा नित्यं येर्चयन्ति महेश्वरीम्-देवतानां देवताया ब्रह्माद्ये-र्या च पूजिता, भूयात् सा वरदा लोके साधूनां विश्व-मंगला। एताम्-एव पुराराध्य विद्यां त्रिपुर - भैरवीम्, त्रैलोक्य-मोहनं रूपम्-अकार्षीत् भगवान्-हरि:

इति श्री रुद्रामले तन्त्रे शिव-नन्दिकेश्वर संवादे भवानी सहस्र-नामावली सम्पूर्णा

अथ इन्द्राक्षी-स्तोत्रम्

ॐ अस्य श्री इन्द्राक्षी स्तोत्र-मन्त्रस्य पुरन्दर ऋषि:, अनुष्टुप् छन्द:, श्री इन्द्राक्षी भगवती देवता, भुवनेश्वरी शक्ति:, माहेश्वरी कीलकं, गायत्री, सावित्री सरस्वती कवचं आत्मनो-वाङ्मन:-कायोपार्जित-पाप-निवारणार्थे सर्व-कामना-सिद्ध्यर्थे पाठे विनियोग:। लक्ष्म्यै अंगुष्ठाभ्यां नम:, भुवनेश्वर्यै तर्जनीभ्यां नम:, माहेश्वर्यै मध्यमाभ्यां नम:, वज्र-हस्तायै अनामि-काभ्यां नम: सहस्र-नयनायै कनि-ष्ठिका-भ्यां नम:, इन्द्राक्षी-भगवत्यै करतल-कर-पृष्ठाभ्यां नम:। इति करन्यास:।

अथ षडंगन्यासः। लक्ष्म्यै हृदयाय नमः, भुवनेश्वर्यै शिरसे स्वाहा, माहेश्वर्यै वषट् वज्रहस्तायै कवचाय हुँ, सहस्त्र-नयनायै नेत्राभ्यां वोषट्, इन्द्राक्षी-भगवत्यै -अस्त्राय फट् ॥ प्राणायामः ॥

ध्यानम्:

ॐ इन्द्राक्षीं द्विभुजां देवीं पीतवस्त्र-धरां शुभाम्। वामे वज्र-धरां सव्य-हस्तेऽभय प्रदाम्। सहस्त्र-नेत्रां सूर्याभां नानालंकार-भूषिताम्। प्रसन्नवदनां नित्याम्-अप्सरो-गण-सेविताम्। श्री दुर्गां सौम्य वदनां पाशां-कुशधरां पराम्। त्रैलोक्य-मोहिनीं देवीं भवानीं प्रणमाम्यहम्।

इन्द्र उवाच

इन्द्राक्षी नाम सा देवी दैवतैः समुदाहृता। गौरी, शाकंभरी देवी दुर्गा-नाम्नेति-विश्रुता १) कात्यायनी महादेवी चन्द्रघंटा-महा तपा। गायत्री सा च सावित्री ब्रह्मा-णी ब्रह्म-वादिनी २) नारायणी भद्र-काली रुद्राणी कृष्णपिंगला। अग्नि-ज्वाला रौद्र-मुखी कालरात्रि-स्तपस्विनी ३) मेघश्यामा सहस्त्राक्षी विष्णु-माया जलोदरी। महोदरी मुक्त-केशी घोर-रूपा महाबला ४) आनंदा भद्रजानंदा, रोग हन्त्री शिव-प्रिया। शिव-दूती कराली च प्रत्यक्षा परमेश्वरी ५) इन्द्राणी चन्द्ररूपा च इन्द्र-शक्ति-

परायणा। महिषा-सुर-संहर्त्री चामुंडा गर्भ-देवता
६) वाराही नारसिंही च भीमा भैरव-नादिनी।
श्रुतिः स्मृति-र्धृति-र्मेधा विद्या लक्ष्मीः सर-स्वती
७) आनंदा विजया पूर्णा मनस्तोषा-पराजिता।
भवानी पार्वती दुर्गा हैमवत्यम्बिका शिवा ८)
शिवा भवानी रुद्राणी शंकरार्ध-शरीरिणी।
एतै-र्नामपदै-र्दिव्यैः स्तुता शक्रेण धीमता। आयुर्-आरोग्यम्-ऐश्वर्या-ऽक्षय-सम्पत्ति कारकम्। क्षया-पस्मार-कुष्ठादि-ताप-ज्वर-निवारकम्। शतम्-आवर्त्यत्-यस्तु मुच्यते व्याधि-बन्धनात्। आवर्तयत् सहस्रेण लभते वांछितं फलम्। राजा वशम्-आवप्नोति सत्यम्-एवन-संशयः। लक्षम्-एकं जपेत्-यस्तु साक्षात् देवीं स पश्यति। त्रिकालं पठते नित्यं धनधान्यं च सम्पदः। अर्धरत्रेपठेत्-नित्यं मुच्यते व्याधि-बन्धनात्-ऐन्द्र स्तोत्रम्-इदं पुण्यं जपेतु फलवर्धनम्। विनाशाय तु रोगाणाम्-अप-मृत्यु-हराय च। राज्यार्थी लभते राज्यं धना-र्थी विपुलं धनम्। इच्छाकामं-तुकामार्थी धर्मार्थी धर्मम्-अव्ययम्। विद्यार्थी लभते विद्यां मोक्षार्थी परमं पदम्। इन्द्रेण कथितं स्तोत्रं सत्यमेव न संशयः। माया कुण्डलिनी क्रिया मधुमती काली कला मालिनी मातंगी विजया जया भगवती देवी

शिवा शाम्भवी। शक्तिः शंकर-वल्लभा त्रिनयना वाक्-वादिनी भैरवी ह्रींकारी त्रिपुरा परापरमयी माता कुमारी-त्यसि ।

अनेन मन्त्रपाठेन आत्मनो वांगमनः कायोपार्जित -पाप-निवारणार्थं श्री इष्ट-दैवी-प्रीत्य-र्थ भगवती आमा कामा चावंगी टंक-धारिणी तारा पार्वती यक्षिणी श्री शारिका-भगवती श्री शारदा भगवती श्री महाराज्ञी भगवती श्री ज्वाला भगवती व्रीडा-भगवती वैखरी-भगवती वितस्ता भगवती गंगा-भगवती यमुना-भगवती कालिका-भगवती सिद्ध-लक्ष्मीः महालक्ष्मीः महात्रिपुर-सुन्दरी सहस्त्रनाम्नी देवी भवानी सपरि-वारा सवाहना सायुधा सांगा प्रीयतां प्रीतास्तु ।

इति इन्द्राक्षी स्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

असतो मा सद्गमय,
तमसो मा ज्योतिर्गमय,
मृत्योर्माऽमृतं गमय ।

भजन

जब सौंप दिया इस जीवन का,
सब भार तुम्हारे हाथों में।

हैं जीत तुम्हारे हाथों में,
और हार तुम्हारे हाथों में।

मेरा निश्चय बस एक यही,
एक बार तुम्हें पा जाऊं मैं।

अर्पण कर दूं दुनिया भर का,
सब प्यार तुम्हारे हाथों में।

यदि जग में रहूं तो ऐसे रहूं,
जैसे जल में कमल का फूल रहे।

मम अवगुण दोष समर्पित हों,
भगवान तुम्हारे हाथों में।

यदि मानुष का मुझे जन्म मिले,
तब चरणों का मैं भक्त बनूं।

इस भक्त की तन-मन का,
रहे तार तुम्हारे हाथों में।

जब-जब संसार का कैदी बनूं,
निष्काम भाव से काम करूं।

फिर अंत समय में प्राण तजूं,
निराकार तुम्हारे हाथों में।

मुझ में तुझ में बस भेद यही,
मैं नर हूं तुम नारायण हो।

मैं हूं संसार के हाथों में,
संसार तुम्हारे हाथों में।



शिव स्तुतिः

नागेन्द्रहराय त्रिलोचनाय भस्माङ्गरागाय महेश्वराय
देवाधिदेवाय दिगम्बराय तस्मै नकाराय नमः शिवाय ।
मातङ्गचरमाम्बर-भूषणाय समस्तगीर्वाण - गणार्चिताय
त्रैलोक्य-नाथाय पुरान्तकाय तस्मै मकाराय नमः शिवाय
शिवामुखाम्भोज विकासनाय दक्षस्य यज्ञस्य विनाशकाय
चन्द्रार्क वैश्वा नरलोचनाय तस्मै शिकाराय नमः शिवाय
वशिष्ठ कुम्भोत्-भवगौतमादि-मुनीन्द्र वन्द्याय गिरीश्वराय
श्री नील कण्ठाय वृषध्वजाय तस्मैवकाराय नमः शिवाय
यज्ञ स्वरूपाय जटाधराय पिनाक हस्ताय सनातनाय
नित्याय शुद्धाय निरञ्जनाय तस्मै यकाराय नमः शिवाय ।

ॐकारं बिन्दुसंयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः,
कामदं मोक्षदं चैव ओंकारं तं नमाम्यहम ।
न जातो न मृतो यश्चक्षयो यसय न विद्यते,
नमन्ति देवताः सर्वे नकारं त० ....
महादेवं महावक्रं महाध्यानपरायणम् ,
महापापहरं देवं मकारं त० ....
शिवात्परतरो नासित शिवशास्त्रेषु निश्चयः,

शमन्ति सर्वं पापानि शिकारं त०.........
वाहनं वृषभो यस्य वासुकिः कण्ठ भूषणम,
वामे शक्तिधरं देवं वकारं त०.........
यत्र तत्र स्थितो देवः सर्व व्यापी महेश्वर,
यो गुरू सर्वदेवानां यकारं त०.........
ॐकारं कर्म चक्रेषु नकारं नाभमण्डले,
मकारं हृदये देशे शकारं कण्ठ भूषणम ।
वकारं वक्रमध्ये तु यकारं ब्रह्मरन्ध्रगम,
एवं षडक्षरस्तोत्रं यः पठेच्छिवसन्निधौ ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते ॥



अथ शारिकास्तुतिः

बीजैः सप्तभिरूज्जावला कृतिरसै या सप्तसप्तिद्युतिः
सप्तर्षिप्रणताङ्घ्रिपङ्कजयुगा या सप्तलोकाहृर्त
काश्मीर प्रवरेश्मध्यनगरेप्रध्यु म्नपीठे स्थिता
देवी सप्तक संयता भगवती श्री शारिका पातुनः
जय भगवति विन्ध्यवासिनि कैलासवासिनि
श्मशानवासिनि हुङ्कारिणि कालायनि
कात्यानि हिमगिरितनये कुमारमातः गोविन्द

भगिनि शितिकण्ठाभरणे अष्टादशभुजे
भुजङ्गवलयमण्डिते केयूरहाराभरणे अजेय
खड्गत्रिशूल डमरू मुदगरचषककल शर चापवरा
अभय पाश पुस्तक कपाल खटवाङ्ग गदा
मुसुल त्तोमर चक्रहस्ते कृपापरे प्रभूत-
वविधयुधे चण्डिके चण्डघण्टे किरातवेशे
ब्रह्माणि रुद्राणि नारायणि ब्रह्मचारिणि
दिव्यतपोविद्यायिनि वेदमातः गायत्रि
सावित्रि सरस्वति सर्वाधारे सर्वेश्वरि
विश्वेश्वरि विश्वकर्त्रि समाधिविश्रानितमये
चिन्मये चिन्तामणिस्वरूपे कैवल्ये शिवे
निराश्रये निरूपाधिमये निरामयपदे ब्रह्मविष्ण-
महेश्वरनमिते मोहिनि तोषिणि भयंकरनाशिनि
दितिसुतप्रमथिनि काले कालकिंकरमथिनि
कालाग्निशिखे कालरात्रि अजे नित्ये सिरंते
योगरते योगेश्वरनमिते भक्तजनवत्सले सुरप्रिय-
कारिणि दुर्गे दुर्जय हिरणये शरणये कुरूमां दयाम।



कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्,
सदा वसन्तं हृदयार बिन्दे भवं भवानी सहितं नमामि।

त्वमेव माता च पिता त्वमेव त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव देव

करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा
श्रवणनयनजं वा मानसं वाऽपराधम्।

विदितमविदितं वा सर्वमेतत्क्षमस्व
जय जय करुणाब्धे श्री महादेव शम्भो।

नन्दन्तु साधकाः सर्वे विनश्यन्तु विदुषकाः
अवस्था शाम्भवी मेऽस्तु प्रसन्नोस्तु गुरुः सदा।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत।

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं च यद्गतम्
त्वया तत्क्षम्यतां देव! कृपया परमेश्वरः

राज्-स्वस्ति प्रजा-स्वस्ति देशस्वस्ति तथैव च
यजमान गृहे स्वस्ति स्वस्ति गोब्रह्मणेशु च।

सह नौ अवतु सह नौ भुनक्तु, सहवीर्यं कुर्वावहै
तेजष्विनाम् अधीतमष्तु माद्विषावहै।



ओम् शान्ति ! शान्ति ! शान्ति ! ओम्

ओम् पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते

पूर्णष्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते

ओम् शान्ति ! शान्ति ! शान्ति ! ओम्



आरती गणेश जी की

जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा ।
माता जाकी पार्वती पिता महादेवा ॥
लड्डुवन का भोग लागे सन्त करें सेवा ॥१॥
एक दन्त दयावन्त चार भुजा धारी ।
मस्तक सिन्दूर सोहे मूसे की सवारी ॥२॥
अन्धन को आंख देत कोढ़िन को काया ।
बांझन को पुत्र देत निर्धन को माया ॥३॥
लड्डुवन का भोग लागे सन्त करें सेवा ।
हार चढ़े फूल चढ़े और चढ़ें मेवा ॥४॥
दीनन् की लाज राखो शम्भु सुत वारी ।
कामन को पूरा करो जाऊं बलिहारी ॥५॥

शिवजी की आरती

जय शिव ओंकारा हर जय शिव ओंकारा ।
ब्रह्मा, विष्णु सदाशिव, अर्धाङ्गी धौरा ॥
ॐ हर हर महादेव !

एकानन् चतुरानन् पंचानन् राजे ।
हंसासन गरुड़ासन वृषवाहन साजे ॥
दो भुज, चतुर्भुज, दशभुज तो सोहे ।
तीनों रूप निरन्तर त्रिभुवन मन मोहे ॥
अक्षमाला वनमाला मुण्डमाला धारी ।
त्रिपुरारी कंसारी कर माला धारी ॥
श्वेताम्बर पीताम्बर बसमांबर अंगे ।
सनकादिक ब्रह्मादिक प्रेतादिक संगे ॥
करमध्ये करमण्डल चक्र त्रिशूल धर्ता ।
दुःख हर्ता, सुख करता जग पालन कर्ता ॥
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका ।
प्रणवाक्षर के मध्ये यह तीनों ही एका ॥
त्रिगुण शिवकी आरती जो कोई नर गावे ।
कहत शिवानन्द स्वामी मनवांछित फल पावें ॥



भजन जय संतोषी मां

मैं तो अरती उतारूं रे सन्तोषी माता की,
जन जय संतोषी माता जय जय मां।
बड़ी ममता है बड़ा प्यार मां की आंखों में,
बड़ी करुणा माया दुलार मां की आंखों में।
क्यूं न देखूं बारम्बार मां की आखों में,
दिखे हर घड़ी नया चमत्कार मां की आंखों में।
नृत्य करूं छुम छुम झम झमा झम झुम झुम,
झांकी निहारूं रे ओ प्यारी २ झांकी निहारूं रे।
मैं तो आरती उतारूं रे सन्तोषी माता की,
जय जय सन्तोषी माता जय जय मां।
सदा होती है जय जय कार मां के मन्दिर में,
नित झांझर की हो झन्कार मां के मन्दिर में।
सदा मंझीरे करते पुकार मां के मन्दिर में,
दिखे हर घड़ी नया चमत्कार मां के मन्दिर में।
दीप धरूं धूप धरूं प्रेम सहित भक्ति करूं,
जीवन सुधारूं रे ओ प्यारा २ जीवन सुधारूं रे।
मैं तो आरती उतारूं रे सन्तोषी माता की।



'शुभ समाप्तम'

P